रास पद्धति

— कृपानिवास

श्रीजानकी वल्लभायनमः ॥

रास पद्धति

महाराज कृपानिवासजीकृत

पं० रामनारायणदास व तदनुज
पं० माधव[illegible]जी से पाकर
उसी को

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द

ने
छपवाकर प्रकाशित किया

लखनऊ
पं० वाल्मीराम के दशोपकारक प्रेसमें छपा
प्रथमबार ५००० प्रति सन् [illegible]९१०ई०
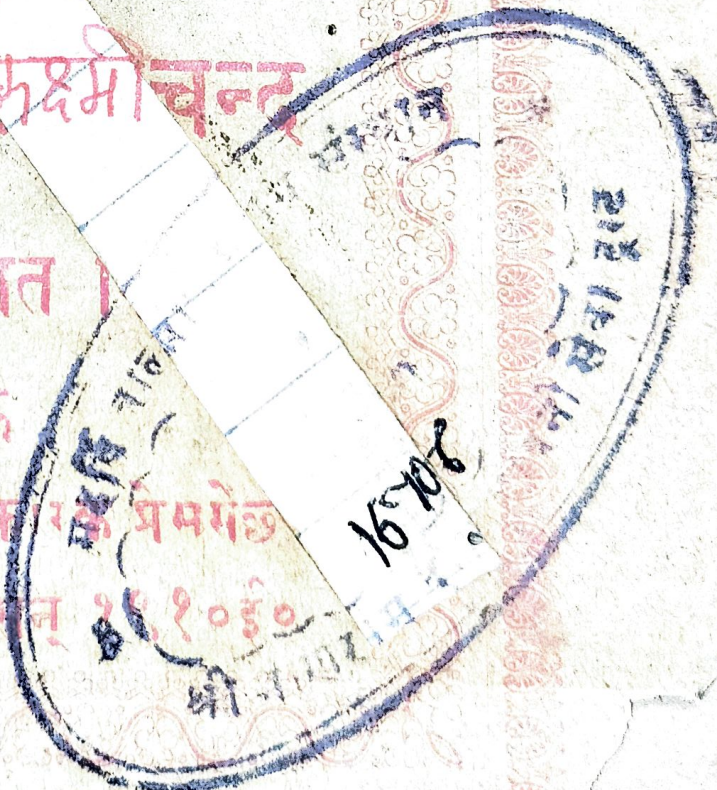
श्री जानकी बल्लभायनमः ॥

अथ श्री रास पद्धित लिख्यते

रागऐमन चार ताल ॥

अंजनी नंदन सुर मुनि बंदन दुष्ट निकंदन जनहृदि चंदन श्रीहनुमत सुभ नाम निरंतरजो जापि जाके जरे दुख बंधन ॥ बोध बिलोचन वारे पेखत परम रसिक गुरु पावत अंधन ॥ कृपा निवास श्री कपिपति पद भजिमुक्त महाभव संभृत फंदन ॥ १ ॥

आडताल ॥

भजमन पवन कुंवर सुखदानि । सब सुख सागर नागर प्यारे रहसिभक्ति उरषानि ॥ सदा सहायक सब गुन लायक बोलत अमृत बानी ॥ कृपा निवास परम गुरु मेरेधरै सीस पर पानि २।

राग दरवारी कान्हडारूपकताल ॥

बन्यो रासमंडल परम सुहायो रसिकन रसभरि भायो ॥ सुभग सिंहासन बने छत्र चमर गन ललित बितान रतन सुरचना रचायो ॥ टेक ॥ मृदुल बिछाये पटमनुपयफैंन छाये तकियासुहाये सुख सकल सजायो चहुंदिश ठाढी रासनिवास अली सुरस बिलास सिया रवन को आवनगायो २

आवन ख्यान जंगला तीन ताल ॥

वारी मनभांवदि आवानि लालकी जनकदुलारी संग रंग भर सुंदर रूप रसालकी कृपा निवासी दृग देषि नवल छबि वलि वलि जादि वांकी चालकी ॥ ४ ॥

दरबारी कीन्हडा रूपक ताल आवन

स्याम सिया भामिन रास रवन वन रंग सों आवन परिवारी ॥ गरभुज माल लाल मदछाके

गज गत चाल झुकन मतिवारी १ ॥ टेक ॥
आस पास नवजूथ सहचरी गावति आवति रस
बससारी ॥ कृपा निवास निरखि दृग उरझे टरत
न रूप खुमारी ॥ ५ ॥

बैठक ॥

राम रस रंग सों संग सिया प्यारी रास मंडल
माधि सोहैं ॥ बनि ठनि रूपासिरोमानि सोहानि
कोटि मदन रति मोहैं ॥ जैसी ये सरद निसा
छकि चांदनी जुगल चंदछबि जोहैं ॥ कृपानिवास
विलास मगन मन कहनि कुशल कबि कोहैं ६

राग ऐमन ताल चारि ॥

आज बिराजत रास मंडल मध्य जनक सुता
संग राम सरयू पुलनिकल कमल सिंहासन बैठे
चंद्रवटधाम । १ । सुकल चंद्रिकाकीट मुकट सिर
सुकल बसन भूषण सितदाम । मुकर दिखावति

बदन निहारति कृपानिवासी अली नाम ७ ॥

मूल ताल ॥

सखिजन राम भोग सुभल्याई मेवे मगद सलौने मिश्री पयपकवान मिठाई ॥ जीमत जानकी रवन कवरकर करत बिनोद प्रमोद अघाई । कृपानिवास अली जल प्यावत अचवनकर सुख दाई ॥ रास प्रथम सुखसाज आरती सखि जनभरि प्रमोद उतारती ॥ झालरि झांजि मृदंग बीन रव बाजत गावत सुभग भारती ॥ थार कंजकर्पूर जोति जग मलयादिक सौगंध झारती ॥ कृपा निवास सिया वल्लभपर जलपद मणिगण सुमन वारती ॥

कान्हडा चार ताल ॥

राम प्रवीन बजाई बीन री तीन ग्राम सुरसप्त लीन रसईक बीसमुरछनी अरोही अमरोही उप

चास कोटतान ताल भेदनिसों सम अरु विशम अनाधात उपजैं जीलखर जमाधि खिर रबि कंपन षटत्रिंसित राग रागनी न्यारी नगरी सरयू पुलनि निसि सरद चंदकी छटकिरही उजियारी ॥ सुनत श्रवण धुनि सुर नर मुनि मन गायन गुनीजन चकित विचारत धाई बिवस सब आई प्रमोद वनरास रमणरस रसिकारंगीनारी थकितभये खग मृगमगरुकिये पवन गवन थकि जल थल चारी। कृपा निवास विलास अवधिपुर रास रच्यो पिय प्यारी ॥ ९ ॥

राग काफी जंगला ॥

रामातेंडी वाजदावो बीन पियारी ॥ सुंदरअवध बिहारी जादूजलम भरी बसकरनी तानै मदन बिकारी ॥ १ ॥ श्रवण सुनत सुधि सबैसुहारी

लाज मर्यादि बिडारी । कृपानिवास धरैं धीरज बृत ऐसी को बरनारी ॥ २

मूलताल ॥

लागी दिलचेटक प्यारिया ॥ परबस चली सबनारियां । राम बीन सुनिसकल बिकल भई आय जुरी मनहारियां । १ चकित बिलोकती रसिक रूपमद पीवत मनुमतिवारियां ॥ कृपानिवास मिलनिकी आसा घूमत मदन खुमारियां ॥२॥ प्यारी बिना नहिं रासरमोरी । आन मिलावो किधो जावो घरभालियां ॥ जनक सुता जलमीन मेरो मनमैं भ्रमरा प्यारि कलियां ॥ १ ॥ बिहसि चली ललील्याई लाघव वाकचतुर प्यारी अलियां । कृपानिवास श्रीराम मिलेहँसि प्रीतमसंग रंग रलियां ॥ २ रासमैं बिवाह मंगल आडताल । मंगल भीनीराति महामंगलभरी ॥ सखिजनमंत्र

बिचारिआय पायनपरी ॥ टेक ॥ हमरे जियापिय आस रासमंडल नचै आयसरावरी पाय ब्याह मंगलरचै ॥ २ ॥ रच्योबितान बनाय कनकमणि गाणदिपैं । कोटि करबि सासिज्जोति निरषि सोभा छिपैं । ३ । दुलहनि सीतासरस रामदूलहे बनैं । चितवानि मुसिकिनि नवल रंग अंगसनैं ॥ ४ ॥ नवल शृंगार सँवारि प्रसाद शृंगारही ॥ सकल सखी छबिदेखि रीझि तनवारही ॥ ५ ॥ करि रसरीती पुनीति प्रीत वसि बावरी । गावति मंगल गीत परे जबभाँवरी भांवरि फेरि जिमाय खिलाये रंगभरे । आरती साज समाज नवल मंडपतरे । ब्याहि चले सुखधाम रामासिया लाडली । रंगभवन बरसंग सुहागानिरंगरली ॥ ८ ॥ यह सुखस्वाद अनाद सदाबसप्रीतको कृपानिवास उपास रास रसरीतको ॥ १३ ॥

राग अडाना मूलताल ॥

निर्तन साखिउसमाज प्रथम नवलरस । लटकि लटि मुरिमुरि फिरकानि फिर प्रणपाति कर थिर-कतिहस । १ । टेक । चलति चपलगति मुरकि ठमकि ठम थमथम तानानिलैं कमनीकस कृपानि-वास गरभुजानि परस्पर निरखत सियबर सुख रस ।

ख्याल ॥

रास रमण कों रसिक रसाल ॥ उमग उठे दोउ-लाल । मनुतट कंज कोसतैं उतेर मानस मिथुन मराल । १ । चंदमरीचिभुक मुक्तावलि पान सुधारस मदभरिचाल । कृपानिवास बिनोद मनोरथ करत रामप्यारी वाल ।

राग षिमाच मूलताल ॥

नवल रसीले लाल रास रसमैंखरे । सहचरि अंसनि धरि भुज झमकानि कबहु ठमकि पै गलैं धरें

। १। टेक । रूप झौंक झुकि परति सखीजन झमकि धरैं मदमैंभरें । बंक बिलोकनि चपलाचौंकनि कोमलता छिनमैं न हरैं । २ । अलि अवलि छबि कलित चहोंदिस कबि कोमिस उपमा न सरैं । कृपानिवास श्रीजानकी बल्लभ नैननि तैं न टरैं । ३ । निरषि छबि अटाकिरहे दृग मेरे ॥ छकित छबीली छबिन छबीले मगन रसील हेरे १ । टेक । मंदहसन ढुक लसन दसन की कसन परैं उरझेरे । तिरछी झांकनि बड़ीबड़ी आंखनि लाखनिके मनघेरे । २ । रासबिहारी बिहारनि प्यारी घूमत मदन घुमेरे । कृपानिवास श्रीजानकीबल्लभ नीके नैन अएरे ॥ ३ ॥

राग ऐमन मूलताल ध्रुपद

उमगे मन रास रचन पिय प्यारी जानकी रचन बननाचै । उघटत गीत छंद सांगीत प्रबंध गति

मंदमंद सखिजन बृंदगावैपाछैं । १ । टेक । बजत मृदंगताल तताकिट थिकटि थिकटि थुंधुं धुकटि धुं धुकटि सुघटति सांचैं । कृपानिवास ललन सरजू पुलनवर नटवर बेष काछैं ॥ २ प्यारी रस मतवारे नैन तेरे । कठनि कटाक्ष निजा छिन बरषत करषत प्राननिमेरे । टेक । काम कला कलवीर महाबलपीर न परषत निरषि अनेरे । कृपानिवास सुजान जानकी मोमनके उरझेरे २ । वारी वो रंगीले रामा अषियां लगी तेंडेरूप । कहा करौं कछु बसनहिं मेरा बूडि गई रसकूप ॥ १ ॥ । टेक । चेटक लाय लगाय लियो चितचतुराई मैं अनूप कृपानिवास लगनि छूटे नहीं सुनिये अवधके भूप । २० ।

तीनताल ॥

सिया प्यारी नाचै हो नाचै हो ॥ नुपुरु बजत ठननननननन ॥ पदकी पटकानि लटकानि मटकानि

कटिकिंकिनिन धुनिझनन झननननननननननन । १ ।

टेक । ग्रीवाढुरति मुरनि अंगुरिनिकीगावनसुरनसुता

नतंननननननननननननन ।कृपानिवासललनवालिहा

रीसाखि जनमनसुखधंननननधंनननन नननननन

तालचरचरी ॥

भलैंनचतनवलरामप्यारे ॥ सरयूतटवटसोमानिकट

मटुकीटमुकटसिरधारे ॥ १ ॥ टेक ॥ चटकीलेपटछि

टकिरहीलटनिपटसुघरघटफैलउघारे ॥ कृपानिवास

रास सियापरसकलसाखिनप्रानवारे ॥ १ ॥

हमीरकल्याण ॥ आडतालयरी

आलीसंगसुहागाने जनकदुलारी निरततअवध

विहारी । सुकलशृंगारं जुगलतन पूरन पूरन निसि

उजियारी ॥ टेक ॥ चहुंदिसलसत समाजसखी ज

नगावतिनिर्तत वाजातितारी ॥ कृपानिवास अली

दृगलागे अनुरागे पियप्यारी ॥ २ ॥

रागहमीरतालजात्रदंडक ॥

नवलरस रासमैं नवलसोभाधरै ॥ नवल आनंद भरनवलरस केलिकरनवलदोउ सु घरनवरंगविचरै ॥ टेक ॥ नवल करगाननवतांननवरीतसों प्रीतनव उमगनवखंड मंडल भरैं ॥ नवलपग अटनि रटनि अलि थटनि मुखमधुरसुखवेन ततथेई तथेई थेई करैं ॥ ॥ नवल नूपुरठनाकिझनकि नवकिंकनी नवलगाति तालनववालके मन हरे ॥ नवल धुनि मृदंग नवगाति सुगंधवरनवल वरवीन सुरझीन उघरैं ॥ ३ ॥ नवलहितु पुंजमनो कंजमंजुलखिलीं नवल अलि विपुलमनमगनि मद छकि फिरैं ॥ नवल पट फरकिनवतरकि गतिहरषि सियनवल दृग चपलकलमीनझगरैं ॥ नवल मुसकानि रस खानिवासि प्रान पिय नवल भुवचलनि हँसिमिल निमनमथढुरैं ॥ नवल अलि निवास नवपास

हितु कृपा करि परम अनुराग नव भागसो अनुसरैं ॥ ५ ॥ आज सिय संग पिय रास मंडलरमैं। मिथुनकरजोरिरसवोरिचितचोरिज गनि गममजांदरज्ञुलसतरसमैं ॥ १ टेक ॥ विविधि भावनिकैंररमकिझुमिझुमिफिरैझुनझनकि धुनि सरस नूपुरजमैं ॥ अमितआमोदरसवोधमैं निपुनिदोउ छिपनिपुनिलसनिर्वासिपरम परमासमैं ॥ २ ॥ लेत बलिहारिपियबारहींवारहंसिविवसरसझीनहितुसकल साहिसाथमैं। परस्पर मथनसुखअतनवहुयतनकरि लहतिवड भागकोकृपासंगमैं। ३। ताताथेईथेई करति पगनठुम ठुम धरतपरतरसफंदअलि बृंदतनमैं ॥ जलजनवनीलतनझलकि हाटक वरन कनक छवि झलकिहाटकवरनकनछवि झलाकिसियस्याम अंगमैं ॥ ४ ॥ वीनकरराम सुरझीन स्यामाभनैंसुनैंजोईगानविस्रांनि भूमानमैं ॥ उमगअंगअंगवढीसुभग

सोभा मढीचढी हितुसैन पर मैनगनमैं । ४ । कलित कलभान नीवलित दुतिजामनी सरदआति जौनिपर भौंन वनमैं । रासयह वास झिलिविहरि सियरवन मिलि मयाअलि निवास परवसत मनमैं । ६ । सुवर सुकुँवार दोउ रासरससंग रचेरूपजोवनभरेसरसमंडल षरे हरेमनसाषिउ लखिहराखि नागर नचै १ । टेक । रनित रसना वली ठनित नूपुर भली मीलीसुरगान लैतान काम निसचे । सुलपलै लाडली लाल सुरताल दै सुघट थिर थिरकि कटि झपटि झटझिटि लचे ॥ २ ॥ वंक रस भाय करलगानि लावानि परम परस सुख गांस ढरिहास्य केलानि मचे ॥ रहसि लीला गसी पीव के उर वसीहेरी चहुंफेरि मन घेरिजिन के जचे ॥ ३ ॥ अकथि कथि को कथा विथकि सुनि सुनि मता जतन करि रसबिना ज्ञान योगी पचे ॥ जुगल अल्हादप्रसाद बिन को लहै अलि

निवास मिल रास रस आन मारगबचे ॥ ४ ॥
श्री जानकी वल्लभ रासमादिक छके ॥ रमकि
रम रम रमत झमाकि झुम झुम भमत ठमकि ठम
ठमनिवर नाग नागनिथके ॥ १ ॥ पगन नूपुर
बजैं मदन बीना लजै ताल बंधान सुरगान
गायनतके ॥ प्रगट नटवर कलनिनचत थेई थेई
ललन हलनि कटि ग्रीवकी पवन लाघवसके । २
चिबुक तरकर दिये फिरत फिरकानि लिये पर
सकुच भुजनि दृग चपल चहुंदिसचके । सरस
सौभग चरित प्रिया प्रीतम करत हरत मनअलि
निवास प्रसाद साधन लखे ॥ २ ॥

राग सोरठ मूल ताल ॥

निर्ततरी रंगभीनें रासमैं ॥ मदन गहल मद
महल बिहारी दोउगर वहिंयां दीन्हे ॥ टेक ॥
उघटत छंदप्रबंधगीत गाति नटवर कला प्रवीने ॥

नूपुरनवलनवलमुखगावत तानमधुरस्वरझीनेअल कनिहलनिचलनिपलकनिकीभलकनिअंगनगीने कृपानिवास नवल कुंजनि रम सियजूरामनवीने ॥ ३ ॥ दोउ मिल गावत राश रसीले ललकनि कंठ सुझलकनि श्रमकन सोमन हसन वसीले ॥ १ । टेक कटि कीलकनि मटकानि छिन छिन अटकनि मदन गसीले कृपा निवास श्री जानकी वल्लभ नैननिमै भरि सीले ॥

राग विहाग आड ताल ॥

बने सुखसाज रास पिय प्यारी ॥ सरजू पुलिन नालिनि नवकुंजनि अलिन पुंजर सरहासि अहारी १ । टेक । मुकिलित कच मुक्ताहल मुखपर द्वै उपमा सुषमारी । जुगल सकल हित बूंद बदन सों कहत चहनि कवि कहनि उघारी ॥ २ ॥ उर मुक्तावलि पदिकहार मनितन अनुकूल सुहारी

मरुरति कीरति रंग रंगकी सखिन संभारि हँसि दोउगर डारी ॥ दृग षंजन अंजनकी रचनारची सुघर सखियांरी ॥ चितवनि चपल चलति चहों ओरनि चित दूतिका सिकारी ॥ ४ ॥ भुजधरि गरनि फिरनि रासमंडल कठनि कली सखी बीन करिन्यारी ॥ जै सियछबिकी छकनि छबिलनि जै सियछटकी सरद उज्यारी । सुघर प्रवीन बजावति गावति बीन तान तननारी ॥ कबहों रिझावति रसिक रसिकनि कबहों हँसाति झुकि लै बलिहारी अद्भुत सुख कहि परत न मोमाति शेष गिरागति हारी। कृपानिवासश्री जानकी बरकी रहसि केलि जानत अधिकारी ॥ रामरहसि रसरास रसायो बाग बिलास पुरी अवचल सुख सकल झाल समछायो ॥ १ ॥ टेक ॥ रवन भूमिरस मंडल राजत सकल समाज बनायो । गौरीपति नारद

चतुरानन साहि चरितनफनि पायो । २ । मंडल चहुंदिस सुघर सहेली अद्भुत नेह जनायो । मध्य विराजत राम जानकी शोभा कहत लजायो ।३। स्याम गवर घन बिजुरी मानो अरुन पीत पहि-रायो ॥ सीस चंद्रका कीट मुकट छवि मनि गन रतन जडायो ॥ ४ ॥ जुगल बदनपै अलकैं झलकैं पलकन चित्त चुरायो ॥ करगहि पहुंपछरी मन मोहन सखियन रास सिखायो । ५ । कोई बीन कोई ताल पखावज कोइ सुरमंद सुनायो । कोई तंबूरा तान तनानि तनमान मनानि ठहिरायो ।६ मुहरि मुचंग उपंगति रंगति राग बिहाग जमायो। ईक सुर कीन्हे बाजत नूपुर ठननठननठननायो । भाव बनावनि सैन चलावन थेईताताताथेईथायो। धिननि धिननि अंग मोरति दोरति सखिजनलाल रिझायो ॥ ८ ॥ कबहुंक मिलकै निरतै दोउनव

नव रस उपजायो । कबहुक प्यारो कबहुक प्यारी हिलिमिलि रास रचायो। आनंद मोद परम सुख बाढ्यो निगम शेष नित गायो ॥ कृपा निवास रसिक की जीवनि जुगल रूप मन भायो । १०

राग केदारो चार ताल

होस परस्पर सुघर रस मंडल मध्य हंसिहसि नवगति नाचैं ॥ गीत छंद सांगीत भेदन सौं उरपतिरप ताताथेई लेतसम सांचैं ॥ १ ॥ चिबुक चिबुक तर कर धर दोऊ अंगउमंग सुरंगति राचैं कृपा निवास श्री राम सिया रस बरषे रंग झर नभ धर पंकति माचै ।

मूलताल ॥

बिहरत रंग बिहार सुघर दोउ प्यार संगे ॥ रास सरोवर मनो हंस हंसनी अंग अंग उठत छबिकी तरंग ॥ टेक ॥ गावत बजावत सखी

जन आवत चहुंदिसतैं मुनुगुनु भरि गंगकृपा निवास उपासिनके हित सुख सिया रामको नित अभंग ॥ २ ॥

धमाल ताल ॥

नच्चत सुलपगति अरी सिया संग रघुबर ॥ रास मंडल मध्य दोउगर बांही उर्पतिरपतातोर्थई कर । १ । बजत नूपुर पग परत समझसम गावत तान सुजान सप्तसुर ॥ कृपानिवास बिलास भरे मन सखि जन जय जय जय रवझर ॥ २ ॥

राग जयत श्री मूल ताल ।

अछी गति नाचतहै । राम रसिकनागर नट ॥ सरजू तट बट छांहिं ॥ निपट पटु झट झट झपट फरकपट ॥ १ ॥ अलक खुली लट लचकि कलित कटि लपट झपट करैं केलि कपट ॥ कृपानिवास चपट चख थकिघट सखि जनमन लुटरही लट ।

रागपरज चारताल ॥

रंगभरे राम रसिक रसबस करि प्यारी रास भवन रसमाते । सुरति बिहार उमंग अनंगति अंग अंग सरसाते ॥ १ ॥ टेक ॥ किंकनी नूपुर वलय मुखरकर लोचन रति ईतराते ॥ कृपानिवास बिलास बिलासी सुंदर संग सुहाते ॥

बिहागराग चार ताल ॥

मोहनी तानछई है रामरसिक की बसिकरलीन्हे प्यारी प्रान ॥ ससुरी तीनग्राम रागनी बिसद भरी मुरछनिठुरी रससान । १ । सुनत श्रवनसब सखीन थकिरही भूलिगई तनमनख रीदीपेंकान कृपानिवासी दासी जहां रसगावति जहां प्यारो प्यारी गुनगान ॥ २ ॥

अथ अन्तरध्यान लीला कान्हडा मूलताल ॥

दोहा-तुमआधीनप्रबीनमैं, मीनयथा बसिबारि ।

बचन चातुरी मानदै, अधिक बढ़ाईनारि । १ ।
राज्य ईसता मानगज, अंकुस नेह नबीन ।
करै स्वबस मदमत्तकों, धारक होय प्रबीन ॥
साखि जनमन की प्रीत गरवताई राम चतुरपाई जा-
न । माननसन हित नेहसर भय देषत अंतरध्यान ।
श्रीहत भई मानो चंददुरे कुहरजनी बाला बिक-
लित प्रान । कृपानिवास श्रीरामरसिक रटि हेरत
बिसरि सयान ॥ १ ॥ तेंडे छिपनेदा कोनसुभाव
पयावो दुधामिश्री ज्यौं मिलकैं प्यारे बिछुर लोन
क्यों डारदया । कहर दूरकर नजर मेहरभर पलक
पहरसी बीतगया ॥ कृपानिवास राममतवारे प्यारे
करिये आजमया ॥ २ ॥ स्यामसलोंने मिलजाना
अवधि के छैलप्यारे ॥ टेक ॥ तुजाबिन अंखियां
तर्लफैं मेंडी जल बिन मीन ज्यौं न्यारे । कृपानिवा-
स रासमैं छिपना बांके फैलतुम्हारे । लगन लगी

री कैसै जीवोंरीमोरी । घरीघरी पलपल कलन परत है वे जैसैं चंदचकोरी ॥ १ नैननि दे रसबस करी प्यारे कारे चितदी चोरी । कृपानिवास श्रीराम रसिरहै वो जीवनडोरी ॥

राग जंगला मूलताल ॥

हरिबिन को जाने मेरे मनकी । आठपहर मोहि कलन परत है प्यास बढ़ी दरसनकी । लगन चोट लागी तन बलकी हलकी चोटै घनकी ॥ कृपानिवास श्रीरामरसिक अब सुधि लीजै बिरहनकी

उरमैं उठत रैन दिन हूकै । लगनि अगनि जरिभईहो कोयला जरी बरी फिर फूकैं । १ । मरम मारसों मरी रही मैं नईमार नहिं चूकैं । कृपानिवास श्रीरामरसिक सुनि मोबिरहनि कूकैं । भलामेंडे नैनान्की तरसावी वोमैं तेडे सदडेजावी ॥

अवधिबिहारी वारी मेहरकरीजे वो सुणा सुंदर रूप

दिखावी । कृपानिवासी वारी दरस पियासी वो सुणा रामरसिक रसप्यारी ॥ भला वो जिंदलगियां तैडे नाल मेहर करी वो दशरथ देसांवरे । नैणा देबिचरूप तुसाडा रसना देबिच रघुबर नामरे कृपानिवास दिवानी तैडी तुज बिन कितबल जावरे । रघुबंसी वो तेडी सूरतियां मैंडे दिलों दे अंदर खुबराहियां तुजाबिन मेनु कछु न भावदा तुज देखैं मे जीवां ॥ १ ॥ सदा खुमारी आंख डियां नूरूपदा प्याला पीवां । तैडे आगैंसदाखडो दी तूहीसिरदासाई । कृपानिवास करो मनमानी दिलजानी गललाई

जंगला ॥

प्यारे राघवजी वो जिंदलगी तैडे नाल ॥ तुज देखें बिनकलन परत पलया ईस्कजंजाल । कृपानिवासी दरस पियासीवे सुणा देदिदार

करि निहाल ॥ १० ॥ वारी वो सजन आखियां नोकजरा लगादे । आसिक तैंडी ईस्क अदानों अपने हाथ जगादे । लोक दिवाने करत बखाने कूडीसरम भगादे । कृपानिवास श्रीरामरंगीले मैं नौवीरंग रंगादे ।

ख्याल ॥

यारीट्ठकलगियां वोडानिवाह्नुणा किसाजहांन करैनहिं सुणना ईस्कलग्या सिरलावणा । कृपा-निवास बंदी देषातर रामरासिक घरआवणा ॥

काफी जंगला मूलताल ख्याल॥

मेडे नाल नेहडालगया कित जांदावों ॥ मैंडा दिलचंचल तैडे बसपाया ओ तू बेपरवाहीयां करदा आठपहर मैंनुध्यानतुसाडावो ॥ रामा तुज बिन कछुन सुहादावो ॥ कृपानिवास उदास दिवानी क्यों नहिं दरस बतादावो । तू मैंडा

दिलजानि भलो वोटुकमुखड़ा बिखिला जावो यार। जिंदडी नरसत बरषत अखियां लै सुसवा वजिवाजावो। छाड़ि उदासी दावान श्रीरामा॥ कृपानिवास कहांयजावो।

जंगला मूलताल॥

सांवरे सजन मैं नोमिलना जरूर वे। दिलजानी मेह्रम प्यार पलकन होनादूरवे। कृपानिवास आस दरसनकी रखना रामहजूरवे।

काफी जंगला

आवोजी प्यारा सानुकीतार सांवदादुक दिदार दै हमैं दिलजानी मति न उदासी लांवदा। कृपानिवास मनभावदासाजन तुमको मेहरन आवदा॥

अडानामूलताल

मोहनी सीता न सुनायजारे छबिमतिवारे

रामरासिकबर होप्यारे। घनलौ बरषसरसरस नागर तरफत प्रान जीवायजारे ॥ मदन महानद बढ्यो है अनाहद बिनतारक मैंखरी हों किनारे। कृपा निवासी प्यारी रूप उपासी चंद बदन दिखलाय जारे ॥ लगी स्याम डोरी भई मैतो भोरी अबसुधि लीजिये मोरी ॥ रास भवन तजि दुरन कवनगुन रसमै विषबूंदघोरी । कबहुंनलाल करी तुम गरबी अब अरबी कहारोरी । कृपानिवास मिले दोउ सुंदर रामस्याम सियगोरी । २ ।

सोरठ मूलताल ॥

वो रघुबंशी भूलनजाणा । मैतो तौडी बंदी रामा दावण लगियां सिर सोहै तैडा बाणा तैडा वो भुलण रामा मैंडावो मरण भला लोगदै दैं सवताणा । कृपानिवासी नुटुकपहिचोणो दिल भरयार पुराणा ॥

राग परज मुलताल

दरसदिखाजोजी राघवजी म्हारा नैणातरसैं म्हारा वगरमैंरायचंबेली भवँरा है उडआजोजी। कृपानिवासीसदा रूपउपासी प्यासी को रसप्याजो जी २ ॥ मनडो घाणो जी तरसैंजी देख्याबिन मनडोघणाजी तरसैं सांवरी सुरतिलोभीडो लोचन सोचत नैणदरसैं कृपानिवास कहैं तव जीवण जव कर राघव परसैं। वोछैलाजी म्हारा मनरी बातनजाणो। थारोरूप गुण मनरो लोभीहि बडा कीन्हो छैथाणो समाझि हरो यह आरत प्यारा परकी पीरपिछाणो कृपानिवास श्रीरामरंगीले रंगसों म्हासों रंगमाणो ॥

ख्याल ॥

वारी मैंडा कोई नबुझदाहाल। हांवेवारी दिल

फंदिया ईस्कजंजाल। कृपानिवास बंदीमैंतैंडा अरज
तुसाडेनाल ॥ हांवेवारी कबवेषां रघुलाल ॥ वारि
मैनुहरिवेषण दाचा वहां वेवारि कब पाऊसी दाव ।
नैनापियासे रूपसुधाकरसक्कूक मचवां आवा ॥
हावेवारी दिलदी तपत बुझाव कृपानिवास दसरथ
देतैंडा अपनी कर अपनाव ॥ हावे वारी टुक
मुखडा दिखलाव ॥

राग हमीर मूल ताल ॥

द्रुमद्रुम बूझ थकी बन हेरत प्यारी बैठी आय
पुलनिवर ॥ तरु बिन कल्प लता मानो
मुरझी झुकिझुकि परति सिथलधर । १ । सखि
जन धारि संभारि पवन ढर श्रमकण हरकोई गहि
पट कटिकर ॥ कृपानिवास कहति कहा दुरैरा
राम रसिक मेरो मनहर ॥ २ ॥

राग काफी मूल ताल ॥

स्याम लखे प्यारी तेरे चखनमैं मानहु गगन सिमटि संपति जुत छपकि रह्यो कल मोरपषनमैं हंस भखन गव दाम दमकि रहीसीस मुकट पट पीत टकनिमैं । अलकै कुटिल चपल कुंडल मधि मनु नागनि मिलि बिहसकनिमैं ॥ सुमन छरी अरुवीन प्रवीन निभुजनि छीन पुनि लीन कखनि मैं ॥ तुवपट पंकज रचना रचिकर लगिहि महा वारि लाल नखनमैं ॥ उनके दृग तुव दृग मिलि दौरत मनु खंजन मनरंज सखनमैं ॥ कृपानिवास रसिक राघव छबि नवल बनी कुछुसकुचछकनिमैं सुनि प्यारी वो नैन सों प्रगटे नैननि रूप दिखा योरी ॥ सुफल मनोरथ मनभावन कों हँसि प्रिया कंठ लगायोरी । १ । दुखके मिस सुख सुघरजे जनायो नेह नवल सरसायोरी ॥ कृपानिवास सिया प्यारे को रासरहासि रसगायोरी । २ ।

राग जंगला ॥

मिलबैठे दोउ प्यारे रासमै ॥ सुंदरस्याम कमल दल लोचन रसिक रूपउजियारे ॥ कृपानिवास आस पूरन सब जीवन प्रान हमारे ॥

अथ प्रीयांतरध्यान राग कमोद आडताल ॥

प्रीतम पर प्रीत परषलैप्यारीदुरत भईरी । मनहु मराली मगन हृदय वर चाह मराल नईरी ॥ हेरत बूझत बन द्रुम बेलीहाहो प्राणनी आलि कितगईरी । कृपानिवास श्री राम रसिक भये रसिकारंग मईरी ॥

राग काफी जंगला मूलताल ॥

वो प्यारी मेनो दरसन दीजे । तुजबिना घड़ी छिनकलन परत है पलपल बलतनछीजे । मीन बिछुरज्यों सलिल सनेही कहो कहां लगिजीजे ।

नित कोमल पलक अंतर हितईत मोचतन पतीजै
कृपानिवास लगोगर सियजू मोहि अपनो करलीजै

परतो रेखता

मिलना जरूरहमकों रसखानि प्रानप्यारी ॥
तेरेदरसकी प्यास मेरेदिलेंबिच भारी १ तुमजानकी
सुजानसदाजानकी जिवारी ।गुलाचिमन की बिचार
मिलैं आवआब दारी २ ।तुमचन्दकी मनिंद मैरी
है चकोरयारी । पलएक नहीं भूलती है तेरी
यादगारी । ३ । प्यारे सजनको छोडि कैं छपनेकी
बान क्योंरी । मिश्री निकासि दूधसों न लोंन
डालखारी ॥ तेरा जुहुस्न नसामेरे चस्महैं बिकारी
तलबी पुकार करैं देदिदार सुघरनारी । ५ ।
तुझबिना जो घरी पलक सोई खलक मैंनकारी ।
तेरे बिरह की चोट मुझै काटती कटारी ॥ ६ ॥
जितनी कठोरताई तुम आजमन मैं धारी ॥

उतनी न सही जात हमैं सप्तहै तुम्हारी ॥ ७ ॥ लगीहै दौरिगल सौं मिल रामरस बिहारी । कृपा निवास अली दोउ बदन देखिवारी ॥

मूल ताल ॥

प्यारी भलै आईवो राम सुजान ॥ चंद बदन सों रूप सुधारस झरत करो दृगपान । सुफल मनोरथ मिल सुख कीजिये चक चकई लखि भान ॥ कृपानिवास रास रसिया दोउ सदाई बसो मेरे प्रान ।

अथ श्री लाडली जीको टोना ॥

राग अडाई मूल ताल ॥

सांवरे पैंटोना कीन्होरी चित हरलीन्हो मनहर लीनो ॥ प्यारो तेरे रंगभीनोरी ॥ प्रानबसी मूरति नुनागरि खान पान तजि दीन्होरी ! बिष

सौभरी तेरी अलकैं नागानि आन उस्यो प्यारो परम प्रवनोरी । कृपा निवासी प्यारी स्यानी है करि प्रीतम को दुख छीन्होरी । नैननिमै कछु कीन्हो बसकरवे रंगभीनो ॥ मनो मोहनी मंत्र चलाये मनमोहन हरि लीन्हो । १ । अबही ओर भये पिय ओरहि तियासिर मोर कहा रसदीनो ॥ कृपा निवास हसी सिय चंचल मुख अंचल धरि झीन्हो ॥ इतिश्री टोना ॥

अथ श्री लालजीको टोना श्री लाडली पर अैमन राग मूल ताल ॥

मेरो मन हरीलीनो हेली रसिक सांवरे चोर । चतुर दृगनसों मिलि उर धसिकरि कसिकसि लगानि मरोर । हसिकरि बसिकरि रसिकरि मोसन लाज सबनि कीरोर । कृपानिवास रामछैलाके फेल फसाई मैजोर ॥ स्याम सलोना चीरेवाला मुज

पर जादू डारगयारी ॥ धारै आय कर देखि नजर भरि दरदीकरि दिलदार गयारी । १ । इस्कनथा तब सीतलथा मन इस्क लग्या तनजार गयारी । कृपा निवासी कहैं बुलायदे आयजिवायदे मारग यारी । ४ । वारी सुनौं रामा प्यारे जादूडेसेकहा कडारे । नैन तुसाडे जादूगरसे चितवनि मंत्र सवारे ॥ कृपा निवास पईबस तैडे प्रान जीवन धन वारे ॥ ५ ॥

राग कान्हडा मूल ताल ॥

वारीवो गुमानी रागुनवारा राम सिकमति वारारी परबस कर मेरो सर्बसहरि लीन्हो नासा पट डारारी । कृपा निवासी गईभूल अपनपो आनवस्या वहीप्यारारी ।

राग षिमाच मूल ताल ॥

सजन सांवरेने मन मोहि लिया । जोबन झोकन

दृग अवलोकन हसने मैं जादू डारदिया । मिठी बातकरि साथ लगाया तरफरात दिन रातहिया कृपा निवास रसिक राघव रसपर बसकर जिन जिन पिया ॥

राग परज ।

अखियां तुमारी वो राघवजी बडी जादू वारी। जबतैं परी लखि औंचाकि जकिथाथि बावरीसी करडारी । कृपानिवासी कहैं गइ घरबर सों जिन की ओर निहारी । ८ ।

राग काफी मूल ताल ।

सिय सोहनिये सुख समझ सांवरो सुघर सयानों बनिआयोरी । अंग माधुरी निरखि परखिकै प्रीत पर्न पायोरी । १ । टोने खैंच सलौंने हित सौं अधर सुधारस प्यायोरी ॥ कृपा निवास मिले प्यारी प्यारे रसमें रस सरसायोरी ।इतिश्री टोना संपूर्ण ।

॥ अथश्री जानकी मान लिख्यते ॥

रागकान्हडामूलताल ॥

येरी कछु स्याम सिखाई। सैन करयो मनमानरी माननीनैं ॥ दुरन लखी प्रीतम की नैननि प्रीत परस्पर जाननीनैं ॥ भौंह चढाय तकै दृग धरनी बरनी छबि सुखदाननीनैं। कृपानिवास पढति कछु मंतर बसिकरिवें हरि प्राननीनैं। गही मुख मोनाछिपायो अंचल चंचलता बिसराई ॥ मनहु मदन ससिपट घन दुरियो चख चकोर बिकलाई यह छबिधारि रसी रस मंडल सखि जुरि करति बडाई ॥ कृपा निवास सिया स्वामानिको सुखमय मान सदाई ॥

राग नायकी ताल चार ॥

लाडली प्राण जीवन धन रावरी प्यारे मान

धरैं बैठी मौन बदन ॥ रहसि सरित सुख बीचि रुकीजनु पवन पृथकी गिरि रीषछदन ॥ १ ॥ करिये यतन जोलौं सलिल बढ्यो नहीं औप चढै रसकोप कदन ॥ कृपा निवास कहत रघु नंदन जावो सखी तुम सुमति सदन ॥ चली पाय परिकै अली अलवेली वामभुजा दृग फर- कैं ॥ वरनायककी नेह पत्रिका ल्याई गुन चतु- राई भरकैं ॥ १ ॥ आस पास फिरि सकुन मना वति देखी बैठी गुरारिस धरकैं ॥ कृपा निवास भरिदो ननागरि कहिये कौंरस तरकैं ।

॥ दोहा ॥

सखी निहार पग पानगहि नैठी मृदु मुसिकाय
तनक झांकी नीचे दृगन नासामटकि चढाय १॥

राग अडणा चार ताल ॥

सुघर सुहागनिभरि अनुरागनि बलिहारी तेरे

रूपकी ॥ बैठी सुघर मान मद लहराने कहिन सकत कोउ रूपकी ॥ १ ॥ प्रगट मानमत निपट सुजान रुचि उठिन हँरि अंगनि चढ़िरंग अनूप की ॥ जयति प्रसाद निवास कृपा की छबि जीवनि श्रीरम भूपकी ॥

मूलताल ।

प्यारी ऐसे अनबोलनो कबहुंन कीजिये ललन मनावै हंसि बोलिए ॥ अपने चितसों प्रीतमके चित नित नयो हित क्योंन तोलिए । बिना दोष कहा रोष बढ़ावो रसमैं बिष नहीं घोलिए । कृपानिवास सिया अटके पिया घूंघटको पट खोलिए । रसमैं रिस नहीं सोहै प्यारी । वे सुकुंवार प्यार अधिकारी हंसि मिलरी सुकुंवारी ॥ तुव मुख चंद चकोर बिहारी घनतैं प्रगट कमोद सुखारी । कृपा निवास सदा सियके

पिय रीझलेत बलिहारी ॥ वारीवो घुमानि रावासि तेरे मान करो जिन प्यारी ॥ जैसें मीन कुरंग भंवरलों वे तैसेही अवध बिहारी ॥ कृपानिवासी प्यारी छाडि उदासी वेरासरमो बलिहारी ।

चर चरी ताल ॥

लगी लाग तोसों सुघरि सुहागनि सुंदर सोंगर लाग उनके मनवासि फनिक मनिलों तूघन दा- मिनियोग ॥ १ ॥ चतुररटैं चातिक लों तुव गुन मिलकीन स्वाति सुहाग ॥ कृपा निवासी हसि बसिकर प्यारी रामरसिक अनुराग ॥

कबित्त ॥

चंद्रमा प्रकास तेरो हासमनो चंद्र मुखी रूप रास देखी स्वास भरे भुवनेसुरी ॥ गुनोकी गर वाई सों गरवीली गिरा गरी नाहनेहमार चाहि मोही है माहे सुरी ॥ बानीबर छंद मिष्ट मिश्री

तरकंद कहां तेरैं सुख राज्य जोहै कोहैरी सुरे सुरी ॥ कृपा निवास सियाजानी शुभलक्ष खानि प्रीतमसो मानठानी तो मैं यावानी दुरी ॥ फुलनका बास लेत कंटक नाभास अली दीपक की तापन लीनेही भली जोतहै ॥ स्वांती कोसनेही नहीं मानत हो बज्रपात वीनाकी सुहात वानी मानी प्यारी मोत है । जानत कलंक भन्यो जगमैं मयंक सबैचाही चकोरन कैंया चरचा सौं कौतहैयेहो ॥ कृपा कोस सिया काहे ईतोरोस करो प्यारेनको दोष प्यारो न्यारो कहुं होतहै । २ ।

॥ राग विहाग मुल ताल ॥

जानिपरी सखि तोरी चतुराई ॥ बात बनावति घात मिलावति कहू सुघर सिखाई ॥ १ ॥ प्रीतमके मन जोनही अंतर तोकत दुरकैं मोहि दुखाई ॥ कृपा निवास कहति मनभावनि काहि मनावनि

आई ॥ २ ॥ मानत नाहि सुजानकी जानिपरी कछु गुरता मानकी ॥ बहुत कही पैं सहीन येको फेरि दई मेरी गई सयानकी ॥ १ ॥ वडोही अंदेसोपर हाथ संदेसो मित्र मित्रता मिल पहिचानकी ॥ कृपा निवास चलो बलिहारी बूझो रुचि क्यों न प्यारी प्रानकी ॥

राग अडाना चार ताल

सुघर सुजान लाल नैक नैननि सुफल करो वलि देखो प्यारी जानकी ॥ सुकुचि दुरायें गत मदन परयो अकुलात तन कछु बायें हाथ जान परै रुचि प्रान की ॥ नैनन की चपलताई चपकि रही पल कन सों अलकनि के जारमानो षंजना कुलान की ॥ जयातिप्रनद निवासकृपा की छबिपर झल कनिमान की ॥

मूलताल ॥

चले मनावन लाल चाल धीरि धीरी चल ॥
नारिनके संग नाह निहारति नेह नईनई प्यारी द्दार
द्दगनि पल ॥ १ ॥ भावभरे मनदाव बिचारत सन
मुख आवत फिरत करत छल । कृपानिवास रास
रामतिहित राम मनावत मान ज्ञान प्रबलबल । २ ।

चार ताल ॥

सिया प्यारी मान धरैंबैठी प्राण जीवन प्यारो
निरखि नवल छबि सुखरस । करपर मुख धरतकृति
धरमानो ससि गुणतजि पंकज वस । १ । लिखति
रसानख हंस बिमानों चंचति चोंचसों क्रीडति
पयलस ॥ कृपानिवास मिल राम निहोरत
मुरति त्तुरति रिस रसमस ॥ २ ॥

राग छाया नट मूल ताल ॥

वारी वो बैनन सों निहोरैं राम रसिक होरैं होरैं

हेरस रास बिलास रावरो आस सदा मन मोरे ॥ १ ॥ तुव मुखद्रवन श्रवन सुख जानैं जानत छबि दृग कोरे ॥ कृपानिवास सुजान जानकी रस बरष्यो हसथोरें ॥ २ ॥

कान्हड़ा ख्याल मूलताल।

हंस बोलो सियाप्यारी रूठणेदा कोण सुभाववो ॥ मैं तो तैडेदावण लगियां प्यारीयां वो टुक मुखड़ा दिखलावो ॥ कृपानिवासी वारी मेहरकरीजे वो नैण सोंनैण मिलावो २८ ॥ दृगानि लगीरी तोरी छबिप्यारी. प्रेमछकी मतिवारी ॥ सोहनी आज सुराज दुलारी षंजन अंजनवारी ।' कृपानिवास सियाहासिहेरो मै तेरे बलिहारी । २९ ।

सोरठ मूलताल ॥

सियाप्यारी वोमैंडी जिंदडियां तैडे उपरकी ती कुर्बानी ॥ रूप सलोनी मया बिचारो रूठणदा नहीं

वेला । सूरतिप्यासी आंखड़ियां नूदीजै दरसने मेला हसणा बोलणा अंतर खोलणामेहर करोमै वारी । कृपानिवास लगे सिया दावनतू जनुसरम हमारी ॥ ३० ॥

अडाना ॥

माननहिं कीजै सुजान प्रानप्यारी । बचन सुधारस सजीवनि मेरी येरी मुखचंद उघारी ।१। दृगनि चितवनि की बानि बिसरिहो परखो क्यों न निहारी । मृदुमुसकानि बिन अधरउदासी मेरे नैन अहारी । २ । जो तव उरकी रचना सुंदर सों कहा जानै अनारी । कृपानिवास उपासी मैंतुव नाहिंरोष अधिकारी ३ बलि बलिजाऊँ वारीप्रिया तेरी । मेरोमन तेरोतेरो येरी कहा होत कहेरी १ तुमसों हम हमसों तुमप्यारी कोई जनजानि लरारी । कृपानिवास हसी सियनागरि जब पियें सीसनरारी २ ॥ इति गुरमान ॥

अथ लघुमान ।

राग केदार मूल ताल ॥

करधर बीनब जावे गावे नई नई तानन्न रामरसिक प्यारीआगें । लागडाट सुरताल भेदनसों उपजैं ज्ञीलनुरागे । १ । तनक तान तजि मानानि मुरकी मान मनोरथभागें । कृपानिवास रास मंडल माधि भुजभरि हंसिगरलागें १।

इति श्रीजानकी मानसंपूर्ण

अथ श्रीराचन्द्रमान लिख्यते रसिको आनंददाता

रागऐमन तालचार ॥

लालन मान मनोहर छबि धरिबैठे मानभवन मनभावन । प्रियाजू प्रानतें मानउतार्‍यो धार्‍यो सुघटन्योपावन । १ । नवनि बदन जनु चंदसुधा झरयोप धरी द्रुमजीव ज्ञिवावन ॥ कृपा निवास

श्रीराम सुहावन जानकी आई मनावन ।

मूल ताल ॥

वारी हमसों ईतरो सन करिये सुनिय रामपियारे जिनके प्राण पगे जल बिछुरैं जीवैं मीन बिचारे । मान बिहारी अरज हमारी पैंयां परौं करौं हाहा कारें । कृपा निवास प्यार बस प्यारी प्राण पिया परवारें ॥ मानलैमान बिसारों सुजान प्यारे ॥ तुमतो जीव जिवावनि हमतनु अपनी जानी उवारो । बैन उचारो मैनिवारो चैनहोय जब नैनानिहारो । कृपानिवासश्री राम मिले हसि प्यारी जू गर गर गारो ।

इति श्री राम मानसंपूर्ण ।

अथ झुलनि राग खिमाच मूलताल ।

पिय प्यारी बसिप्यार रास रस झुलैंरी । रहसि

हिंडोरैं लसन जुगल छबि जन उपमा भूलैरी ॥
। टेक । चंद्रकलादि झुलावति गावति फरकत
अंग दुलैंरी । कृपानिवास जानकी बल्लभ निरखि
जुगल छबि फूलैंरी । १ । राजकुंवर मेरे संग
लग्योरी ॥ जहां जहां जाउं तहां तहां लखाउं
प्रेम बिबस रस रहत पग्योरी ॥ १ ॥ सोयरहों
स्वपने चमकावैं जागिउठों तो मृदुमुसकावैं । हसि
हेरों तब फूल मगल तन रोस करौं तब हाहाखावैं
बेस दुराय दुरो परिबनमैं दिष्ट चुराय बदन पट
खोलैं ॥ पग परसत अपराध छिपावत मन हरनी
मधुबीनी बोलै । ३ । भवनाछिपों खिरकी खरकावैं
पाय अकेली अंकभरैरी । सरजू जाऊ न्हान
मिसपाछैं आयसुनान्हात कौतिक करैरी ॥ ४ ॥
हौंरिबसों गृह आगें मेरे गुनगावै हसि बीन
बजावै ॥ कृपा निवास राम रसिया वर रसिकाने

हित नित रस बरषावै ॥

अथ बन क्रीडा ॥ राग केदारा ॥

खेलत प्रमोद बनगोरी सिया स्याम घन॥ कुंजनि कुंजनि दुरत परस्पर देख परस तस्ससन पाई पायेख कर हसत हसावन गावत धावत केलि सुघरमन ॥ कृपा निवास बिलास बिहारी प्राणबसो प्यारी राम रसिक धन ॥

॥ राग अडाणा मूल ताल ॥

भलाजु कुंवर तुम भये नये छैल ॥ चोर प्रगट प्यारे बसत सोमवट रोकत पनघट गैल ॥ १ ॥ लूटत जोबन नवजुवतिनकौ जान परे अबरावरे फैल । कृपा निवासी भई भेट ललीसों सुफल फली नई सैन ॥ इति श्रीबन लीला संपूर्ण ॥

अथजलक्रीडा राग कालिंगडामूलताल

अनुरास रसिक सिया प्यारीजू । क्रीडत सलिल

बिहारीजू ३॥ रास रमत श्रमसीतल कारण रति सुख उमग उघारीजू ॥ सर्यू मगन बिलोकत दंपति हंस मिथुन मानो मदन बीकारीजू ॥ कृपा निवास आलिगण आखै चाखै रस रतिवारी जू ॥ फूलि कुमद बिसद जल छाईरी ॥ रति सुखसेज सुहाईरी ॥ तापर क्रीडत रसिक संग प्यारीं मदन कला सब लाईरी ॥ १ ॥ बार बिहार फुहारनि कोझर भूषण रव सखिगान मिलाईरी ॥ कृपा निवास श्रीजानकी बरकी रस लीला मन भाईरी ॥

इति जल क्रीडा ॥

अथ श्रृंगार राग कालिंगडा ॥

प्यारे जल लोलत थल आयेरी ॥ नवल श्रृंगार बनायेरी ॥ रास मंडल मध्य राज बि-

राजे राग सखीजन गायेरी ॥ १ ॥ सजल अलक दोउ पूंछ परस्पर रंग बिलोकत मृदु मुसकायेरी ॥ कृपा निवास श्रीराम रसिक सिया नैन कछुक अलसायेरी ॥

राग परज मूल ताल ॥

भोग समय सिय पिय रुचिताई ॥ सर्द समय सजि सखी चतुरवर रंजित थार चौकी मनि ल्याई ॥ पै मिश्रत औदन सित मिश्री सरद मसाले सोज बनाई ॥ जेजे रुचि उपजति मन भावन तेते बिंजन चाष्ट चढ़ाई ॥ २ ॥ जीमत लोलकि लोलति करि बोल बोल सहचरि नियराई। नीर नवल झरी भरी सारी प्यावति पिय प्यारी उरभाई ॥ ३ ॥ करि अँचवन लै शेष चली सब कृपा जीमाय सकल जुरिआई ॥ कृपानिवास

प्रसाद हृदय धरि बीरी सोंज बनाय खवाई ॥ ४ ॥
करत आरती सरद समयकी ॥ सरद कर्पूरि पूरि
बर थार जगाति जोति सुख होत गमैंकी ॥ १ ॥
चमरछत्र छबि छायरही सब सहचरि गाय बजाय
कीलोलैं ॥ नचत नवल नवजल पट ताराति
वाराति तन मन जैधुनि बोलैं ॥ २ ॥ नवल नव
गुनानि रिझाय भिजाये हर्षि जुगल मन सकल
महर्षि ॥ जयाति प्रसाद निवास आलि सब लै
बलीहारी सियजुवरकी ॥ ३ ॥ महल पधारो
लालनैन आलसभरे । लोचन फेरि उठे हँसि
नागर मन मथ पायपरे ॥ १ चले उमंग मद
मदन घूमते सखीजन अंसनि बांहधरे । बर्षत
सुमन सुगंध फुहारानि गान करत सुरसोंमधुरे २
छूटाति छविकी छटा अटा चढि सेज भुवन उघरे ।
कृपानिवास श्रीजानकी बल्लभ सैंन रैंन सुखटरे ।

अथ प्रातसमय।

राग ललित आडताल

सुलखि पिया मोहेरी सियाकी मुसकानि ॥ नैन खिले मुख बिकस मनोहर रस भृकुटिन धरिआन ॥ १ ॥ अधर लसन छवि हंस असन की रासिकराम के अटके प्रान। कृपानिवास सहन बस करनी प्यारी की यह बान ॥ २५ ॥ जिते रहो रामरासिक बिहारी। तेरी सूरति मेरे द्दगउरझी पलक न ह्वाजिय न्यारी ॥ १ ॥ सरजू पुलन रामललना संग येही आसहमारी ॥ कृपानिवास असीसाति मुखलै प्यारो जीव जियारी ॥ २ ॥

मूलताल ॥

उरझरहे वा रसिकर पेचनसों ॥ राम रसिक पिया प्यारीके। नाहिं सँभारत रस मतवारो

बसमैं पऱ्यो मतिबारीके ॥ १ ॥ नासा चढ़नि बिलोकानि तिखी भीज गये रसबारीके ॥ कृपा-निवास मान मनोरथ उघरत प्रान बिहारीके २७ । मोहि सोवनदे रैन रही थोरी प्यारे । सबनिस संग अनंग रमाई अंगनि आलस भारे । प्रीतम प्रीत की रीत न जानों स्वारथ मीत निहारे ॥ कृपानिवास सिया सुकुंवारी हस कछु नैन ततारे ॥

राग भैरों मूल ताल ।

आखियां लखि उरझानी छैल छबीले लालसों मेरी टरहु बताय ॥ बहुत समझाइ मानतना नहिं अमानी ॥ इनकी लगनि लग्यो मनमोहै रघुबर हाथ बिकानी । कृपा निवास सुधारस पीवत फिर पीवैं क्यौं पानी ॥ सजन तैंडेवारनें मैंनोंवी लैचलनावो । राम बेषणनु मैंडा दिल चाहिदा वो लगियां इस्क कमालवो । कृपानिवास

दरस पियासी करणा यार निहालवो । दंपति प्रात कौतिक करैं मृदु मुसकात भांवती बतियां रतियां मुख उघैरं ॥ संग सोहत अंग अराति भुजनि अंखनि धरैं । करनि केलि कपोल परसत झिजकि पलकानि परैं ॥ बार बसन बिहार बिगलत समझिसों संभरैं ॥ कृपा निवास श्रीजानकी बल्लभ नैन सब सखिभरैं ॥

इति श्री कृपानिवास जी बिरचितं रामरास समय के पद संक्षेपेन लिखितम्

श्री जानकी बल्लभाय नमः लिखितं ॥

श्री अयोध्या मध्ये गरुड ध्वज रामानुज दासः ॥